Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.45269, SEPT-OCT 2017, VOL- 4/36

बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया मे शिक्षक की भूमिका

अमित रत्न द्विवेदी

(Ph.D. शोधार्थी), शिक्षाविभाग, शिक्षाविद्यापीठ, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीयहिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा (महाराष्ट्र) amitrdwivediau@gmail.com

Abstract

प्रस्तुत शोध अध्ययन गुणात्मक शोध उपागम पर आधारित है, जिसका प्रमुख उद्देश्य बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका को ज्ञात करना है। बहुसांस्कृतिक कक्षा - कक्ष की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका परंपरागत कक्षा कक्ष की भूमिका से अलग होती है | राष्ट्रीयपाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 में कहा गया है कि एक बहुसांस्कृतिक कक्षा -कक्ष में शिक्षक द्वारा शिक्षण -अधिगम से सम्बंधित वातावरण इस प्रकार निर्मित किया जाना चाहिए जिसमें बालक को अपनी योग्यता , क्षमता, मानसिक स्तर तथा स्वागति के अनुसार सीखने का अवसर प्राप्त हो सके। जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा एक त्रिध्रुवीय प्रक्रिया है , इसमे एक छोर पर एक शिक्षक होता है तथा अन्य छोरों पर शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम | शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण होती है, जितनी की शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम की। एक कक्षा में ही विभिन्न संस्कृतियों के विद्यार्थी शिक्षण -अधिगम की प्रक्रिया में सम्मिलित होते हैं ,इसलिए शिक्षक के सामने यह चुनौती होती है कीवह विद्यार्थियों की संस्कृति तथा अधिगम क्षमता के अनुरूप शिक्ष ण का आयोजन कर सके | प्रस्तुत शोध में शोधार्थी के द्वारा यह जानने का प्रयास किया गया है की एक बहु - सांस्कृतिक कक्षा कक्ष किशिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक किन-किन भूमिकाओं का निर्वहन करता है।

Keywords- *बहुसांस्कृतिक, त्रिध्रुवीय, संपोषक*

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

प्रस्तावना

"एक प्रभावी शिक्षक वह है जो बालकों की रुचियों , आवश्यक्ताओं,मानसिक स्तर,अभिवृत्ति आदि को ध्यान में रखकर शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के लिए उचित वातावरण का निर्माण करता है साथ ही साथ बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखकर उनको स्वयं सीखने के अवसर प्रदान कर उन्हें आगे बढ़ने में मदद करता है |"

- मिश्रा (2016).

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में शिक्षक, शिक्षार्थी तथा पाठ्यक्रम तीनों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। शिक्षक तथा शिक्षार्थी पाठ्यक्रम को ध्यान में रखकर विभिन्न प्रकार की गतिविधियां संपादित करते हुए शिक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करते हैं। जॉन डीवी के अनुसार विद्यालय समाज का लघु रूप है ,

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

इस कथन से यह सिद्ध होता है कि जो घटक आपस में मिलकर समाज को संपूर्ण बनाते हैं वे सभी घटक एक विद्यालय में पाए जाते हैं। समाज अपनी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर विद्यालय की स्थापना कर ता है तथा यह आशा करता है कि विद्यालय समाज की संस्कृति को ध्यान में रखते हुए शिक्षा के उद्देश्यों को पूरा करे। विद्यालय समाज की संस्कृति का संरक्षण , संवर्धन तथा हस्तांतरण करता है। विद्यालय एक ऐसी संस्था है जहां विभिन्नसंस्कृतियों से आए हुए विद्यार्थी एक साथ एक कक्षा में सीखते हैं। अतः इस प्रकार की बहु -सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में शिक्षक का दायित्व विद्यार्थियों को मात्र शिक्षित करना ही नहीं होता अपितु उनकी संस्कृतियों को ध्यान में रखते हुए उनका सर्वांगीण विकास करना भी होता है । बहु -सांस्कृतिक कक्षा -कक्ष एक ऐसी कक्षा होती है जिसमें विभिन्न पारिवारिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेश के विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करते हैं । अतःऐसी कक्षा में सफल शिक्षक उसी को माना जाता है जो इन सारी बातों का ध्यान रखते हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी बनाता है। वर्तमान समय में शिक्षा की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए सभी शिक्षा प्राप्त करने को आतुर हो गए हैं और शिक्षा प्राप्त करने के लिए न सिर्फ एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश स्थित एक देश से दूसरे देश की यात्रा कर रहे हैं। ऐसे में विभिन्न संस्कृतियों तथा सामाजिक पृष्ठभूमि केविद्यार्थियों को एक साथ शिक्षित करना शिक्षकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है । अतःएक शिक्षक में वह सभी गुण होने चाहिए जो इन विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुएशिक्षण कार्य को पूर्ण कर सके।

बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में अध्यापन करने वाले शिक्षक मैं अनेक गुणों का समावेश होना आवश्यक है। बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष शिक्षण अधिगम परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए एक शिक्षक में निम्नलिखित गुणों का समावेश होना अति आवश्यक है-

बालकों के समन्वित विकास के प्रति प्रतिबद्ध-

शिक्षा का एक प्रमुख उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व का समन्वित एवं संतुलित विकास करना होता है। शिक्षक शिक्षा के द्वारा बालकों के समन्वित विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है । बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में विभिन्न संस्कृतियों से आए हुए विद्यार्थी एक साथ अध्ययन करते हैं । अतः शिक्षक अपनी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया इस प्रकार से संचालित करनी चाहिए कि कक्षा -कक्ष में उपस्थित विभिन्न संस्कृतियों से आए बालकों का शैक्षिक मानसिक सामाजिक आर्थिक राजनैतिक आदि सभी पक्षों का समन्वित एवं संतुलित विकास हो सके।

विभिन्न संस्कृतियों से परिचित-

बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष की प्रमुख विशेषता यह होती है कि उसमें विभिन्न संस्कृतियों से आए हुए विद्यार्थी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में भाग लेते हैं। अतः एक शिक्षक को विभिन्न संस्कृतियों

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

से परिचित होना अति आवश्यक है । इसका कारण यह है कि यदि शिक्षक विभिन्न संस्कृतियों से परिचित होगा तो वह प्रत्येक संस्कृति से आए हुएबालकों को गहनता से समझ पाएगा। साथ ही साथ उसकी सामाजिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं से परिचित होते हुए बालकों को उनकी क्षमता आवश्यकता रुचियों व्यक्तियों आदि के अनुसार शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के परिवेश के निर्माण में सहायक हो सकेगा।

पूर्वाग्रहों से रहित-

बहु-सांस्कृतिक कक्षा -कक्ष में शिक्षक तथा छात्रों दोनों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवेश अलग-अलग होता है । अलग-अलग संस्कृतियों से संबंधित होने के कारण कभी-कभी शिक्षक तथा छात्रों के मध्य सांस्कृतिक द्वंद जैसी संभावनाएं उत्पन्न हो सकती है । जिससे शिक्षक छात्र विशेष क्षेत्र विशेष या संस्कृति विशेष की ओर झुकने लगता है। जो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करता है।अतःएक प्रभावी तथा निष्पक्ष शिक्षक की भूमिका में बहु -सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में अध्यापन करनेवाले शिक्षकों को पूर्वाग्रहों से रहित होना चाहिए ताकि शिक्षण अधिगम प्रक्रिया प्रभावी रूप से संपन्न हो सके।

विषय विशेषज्ञ-

एक शिक्षक तभी प्रभावी शिक्षक माना जाता है जब वह अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता होता है । बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में विभिन्न परिवेश छात्र सम्मिलित होते हैं। ऐसे में शिक्षक का यह दायित्व होता है कि वह अपने विषय में विशेषज्ञता रखता हो । जिससे वह छात्र को विषय से संबंधित उचित ज्ञान प्रदान कर सके तथा विषय से संबंधित बालकों की सभी जिज्ञासाओं का प्रभावी तरीके से समाधान कर सके क्योंकि बहु -सांस्कृतिक कक्षा -कक्ष में विभिन्न संस्कृतियों के विद्यार्थी एक साथअध्ययन करते हैं। विभिन्न संस्कृतियों से संबंधित होने के कारण उनकी अधिगम शैली अधिगम गति तथा अधिगम क्षमता भिन्न-भिन्न होती है। उनके विषय से संबंधित अनेक समस्याओं का सामना करना होता है। अतः शिक्षक का यह दायित्व होना चाहिए कि वह बालकों की समस्याओं का निराकरण कर सके तथा प्रभावी अधिगम हेतु छात्र केंद्रित वातावरण का निर्माण कर सके।

विभिन्न संचार तकनीकियों तथा शिक्षण विधियों का ज्ञाता

वर्तमान युग विज्ञान तथा तकनीकी का युग है । शिक्षक अपनी प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए विभिन्न तकनीकी उपागम का उपयोग करता है । अतः बहु -सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में अध्यापन करने वाले शिक्षक को विभिन्न संचार तकनीकों का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह कक्षा कक्ष में प्रभावी शिक्षण कार्य को संपादित कर सके। वर्तमान शिक्षा पद्धति में विद्यार्थी को केंद्रीय स्थान दिया गया है ।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समस्त प्रकार की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का नियोजन विद्यार्थी को ध्यान में रखकर किया जाता है।अतः शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह उद्देश्य तथा आवश्यक्ताओं को ध्यान में रखकर उचित शिक्षण विधि का चयन कर सके । विद्यार्थी विभिन्न संस्कृतियों से संबंध रखते हैं इसलिए संभव है की उनकी अधिगम शैली भिन्न -भिन्न हो। ऐसे में सभी को स्वर तथा सहज रुप से शिक्षा सुलभ हो । इसके लिए आवश्यक है किस शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों का तकनीकी उपकरणों का तथा संचार तकनीकी का ज्ञान हो।

अच्छा वक्ता तथा नेतृत्वकर्ता-

एक शिक्षक में यह गुण प्रमुख रूप से होना चाहिए। वह अपनी बात को छात्रों तक उसी रुप में पहुंचाएं जिस रूप में वह छात्रों के लिए ग्राह्य हो शिक्षक अपने प्रभावशाली शब्दोंका प्रयोग करना चाहिए और वाकपटु होना चाहिए। जिसके माध्यम से कक्षा के वातावरण को रोचक पूर्ण बनाया जा सके। शिक्षक छात्रोंको सामाजिक , सांस्कृतिक , शैक्षिक , आर्थिक , राजनीतिक तथा व्यवसायिक सभीक्षेत्रों से संबंधित निर्देशन प्रदान कर छात्रों को उचित मार्ग की ओर अग्रसारित करना चाहिए।

प्रजातांत्रिक/संवैधानिक मूल्यों का पोषक-

बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में विभिन्न परिवेश से संबंधित छात्रों को उनकी रुचि योग्यता तथा क्षमता के अनुरूप शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने हेतु शिक्षक कोसभी छात्रों को आगे बढ़ने तथा अपनी रुचि योग्यता तथा क्षमता के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करने की अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। कक्षा में शिक्षक को यह विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि वहसिर्फ किसी संस्कृति विशेष तकशिक्षा की सुलभता प्रदानना करें।वरन सभी सामाजिक-सांस्कृतिकपृष्ठभूमि से आए हुए छात्रों कुछ शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराएं।

छात्रों के पूर्व ज्ञान से परिचित तथा उन्हें सीखने में व्यस्त रखें-

एक शिक्षक में यह गुण आवश्यक रूप से होना चाहिए कि वह छात्रों के पूर्व ज्ञान से परिचित हो और उसी ज्ञान के आधार पर आगे की शिक्षा कार्य का संचालन करें । जिससे कि छात्रों का सही रूप में चतुर्मुखी विकास संभव हो सके । इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक छात्र के पूर्व ज्ञान से परिचित होकर उन्हें विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों शिक्षण अधिगम प्रक्रिया तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय रुप से भाग दिला कर उन्हें सीखने में व्यस्त रख सके । इस से छात्रों ज्ञान में संशोधन संवर्धन और परिवर्धन हो सके।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शिक्षक-छात्र व्यवहार मित्रवत हो-

शिक्षक का यह दायित्व बनता है कि वह कक्षा का वातावरण सभी के लिए सुखद और मित्रवत बनाए रखें । जिससे विभिन्न सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से संबंध रखने वाले विद्यार्थी अपनी अपनी समस्या का निराकरण बिना किसी झिझक के और बिना किसी भेदभाव के कर सकें । शिक्षक को यह चाहिए कि विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान में उन्हें इस योग्य बनायाजाए । जिससे वह अपनी समस्या का समाधान स्वयं करने में सक्षम हो सके।

शिक्षक शिक्षण व्यवसाय के प्रति जवाबदेह-

अच्छे शिक्षक की प्रमुख विशेषताओं में से एक उस का शिक्षण व्यवसाय के प्रति जवाबदेह होना है। शिक्षक का दायित्व बनता है कि वह कक्षा में नियत समय पर उपस्थित हो । जिससे छात्र भी शिक्षक से प्रेरित होकर समय से कक्षा में उपस्थित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान कक्षा कक्ष में शिक्षक द्वारा किया गया शिक्षण कार्य तर्कपूर्ण हो और वास्तविकता के धरातल परप्रासंगिक हो बहु - सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में विभिन्न संस्कृतियों से संबंध रखने वाले छात्रों को उनकी सामाजिक सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा प्रदानहो रही है या नहीं हो रही है । यह जिम्मेवारी शिक्षक की होनी चाहिए और उसे अपने कर्तव्यों के प्रति जवाब देह होना चाहिए। शिक्षक का यह कर्तव्य बनता है कि वह विभिन्न संस्कृतियों से जुड़े छात्रों को उचित निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर उनकी समस्याओं के समाधान में सहयोग करें। जिससे कि छात्र एकाग्रचित होकर अध्ययन कर सकें। शिक्षक को चाहिए कि वह सभी संस्कृतियों से जुड़े विद्यार्थियों को बिना किसी भेदभाव के निर्देशन एवं परामर्श प्रदान कर शिक्षा प्रदान करें । यह सभी कार्य शिक्षण की गुणवत्ता पर निर्भर करता है । जिसके प्रति शिक्षक को जवाब देह होना चाहिए।

सकारात्मक तथा समीक्षात्मक-

बहु-सांस्कृतिक कक्षा -कक्ष में विभिन्न संस्कृतियों से संबंध रखने के कारण निश्चित तौर पर छात्रों मैं व्यवस्था देखने को मिलती है। जिसमें एक छात्र की संस्कृति दूसरे के समरूप या विरुद्ध भी हो सकती है। ऐसे में शिक्षक का यह दायित्व बनता है कि वह कक्षा के सभी छात्रों में सभी धर्मों और संस्कृतियों के प्रति आदर की भावना का विकास करें तथा छात्रों मेंपल रही दुर्भावनाओं को दूर करें । विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आए छात्रों को शिक्षा प्रदान करने के दौरान शिक्षक का यह दायित्व बनता है की छात्र जो कुछ भी सीख रहे हैं । उनका समय-समय पर मूल्यांकन करता रहे। जिससे छात्रों के गुण व दोष परिलक्षित होते रहे और शिक्षक उन दोषों को दूर करते हुए छात्र के सीखने में परिवर्धन करता रहे। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक सभी छात्रों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखता हो तथा समीक्षात्मक ढंग से मूल्यांकन कर छात्रों के दोषों को दूर कर सकें तथा छात्रों के सीखने में उत्पन्न

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हो रहे व्यवधान को दूर कर छात्रों में सभी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का बीजारोपण कर सकें । सीखने की प्रमुख विधियों में से एक अनुकरण द्वारा सीखना होता है । बहु-सांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में छात्र अपने प्रिय शिक्षक से किसी न किसी रूप में प्रभावित होते हैं और शिक्षक द्वारा किए जा रहे कार्योंका अनुकरण करते हैं। इसलिए यदि शिक्षक में सकरात्मक दिशा की ओर आगे बढ़ने का गुण रहेगा तो छात्र भी शिक्षक का अनुकरण कर इन गुणों को सीख सकेंगे। इसके अलावा भी यदि शिक्षक स्वयम सकारात्मक सोच रखकर सभी छात्रों को सही दिशा में एक दूसरे का सहयोग करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करेगा तो निश्चित तौर पर छात्र भी शिक्षक का अनुकरण कर सहयोगी प्रविति के होंगे और सभी के प्रति सकारात्मक सोच का विकास कर सकेंगे । आज के छात्र कल के समाज के नागरिक हैं और हम जिस प्रकार के समाज की कल्पना करते हैं । हमें वैसा ही नागरिक शिक्षक द्वारा तैयार किया जाना चाहिए जो ना सिर्फ शिक्षण अधिगम के दौरान बल्कि सामाजिक क्रियाकलाप के दौरान भी दूसरे व्यक्तियों के न सिर्फ दोस्त को देखें अपित उनके गुणों से भी परिचित हो और उनके दोषों को दूर करने का प्रयत्न करें तथा गुणों को प्रेरित करने की कोशिश करें शिक्षक के सकारात्मक तथा समीक्षात्मक दृष्टिकोण के अभाव में ऐसे समाज की कल्पना करना सिर्फ एक कोरी कल्पना करनी होगी। इसलिए एक सहयोगी सकारात्मक और इस निघत शांति वाले समाज की स्थापना के लिए शिक्षक में सकारात्मक तथा समीक्षात्मक गुण होना अति आवश्यक है।

हास्य की भावना रखना-

विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि से आए हुए छात्र जब एक जगह एकत्र होकर शिक्षा प्राप्त करने की दौड़ में सम्मिलित होते हैं तो धीरे-धीरे विषय से संबंधित गंभीरता से छात्र में उब उत्पन्न होने लगती है जिससे छात्रों की एकाग्रता भंग होती है और शिक्षक द्वारा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के दौरान सिखाए गए पार्ट पर भी उचित सफलता नहीं प्राप्त होती है । क्योंकि लगातार पढ़ाने से कक्षा का वातावरण नीरस होने लगता है। कक्षा के वातावरण को रोचक बनाए रखने के लिए तथा छात्रों में रुचि उत्पन्न करने के लिए यह आवश्यक होता है । किस शिक्षक द्वारा शिक्षण कार्य करते समय व्याख्यान के बीच बीच में विषय विशेष से संबंधित कुछ रुचिपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत कर छात्रों का ध्यान विषय की ओर बनाए। रखें छात्रों में विशेष से उत्पन्न ना हो इसलिए आवश्यक हैकी शिक्षक शिक्षण अधिगम के दौरान कुछ हास्य प्रसंग ही उठाता रहे । किंतु बहु -सांस्कृतिक कक्षा -कक्ष में किसीभी प्रकार की विनोदपूर्ण बात कहने से पूर्व इस विषयपर अवश्य ध्यान रखना चाहिए की विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि और संस्कृति से जुड़े छात्रों को विनोदपूर्ण में कही गई कोई बात उनकी अपनी संस्कृति से जुड़ी हुई ना हो जिससे कि उन्हें ठेस पहुंचे।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि बहुसांस्कृतिक कक्ष -कक्ष में विभिन्न परिवेश तथा पृष्ठभूमि के छात्र उपस्थित होते है तो ऐसे में शिक्षक का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है| शिक्षकछात्रों की ना सिर्फ रूचि, क्षमता , योग्यता का ध्यान रखते है बल्कि उनके सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से भी परिचित होते है, जिससे छात्रोंके सिखने की क्षमता , सामाजिक आवश्यकता तथा छात्र को निर्देशन प्रदान करने के लिए छात्र से सम्बंधित उचित सूचनाये प्राप्त की जा सके तथा छात्र को उचित निर्देशन एवं परामर्श प्रदान किया जा सके|बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में सभी को प्रभावी रूप से शिक्षित एवं दीक्षित करने के लिए शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया के दौरान शिक्षकों में कुछ गुण प्रमुख रूप से होने अनिवार्य है | शिक्षकों का यह दायित्व बनता है कि वह बालकों का समन्वित एवं संतुलित विकास करे जिससे बालक का सामाजिक , आर्थिक, राजनैतिकतथा मनोवैज्ञानिकविकास पूर्ण रूप से हो सके | शिक्षक बालकों का सम्पूर्ण विकास तभी कर सकता है जब वहस्वयं विभिन्न संस्कृतियों से परिचित हो जिससे शिक्षक शिक्षण के दौरान वहाँ की आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर शिक्षण कार्य संपन्न कर सके |बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में शिक्षण के दौरान शिक्षक को किसी भी प्रकार के भेद -भाव से दूर रहना चाहिए | कक्षा यदि बहुसांस्कृतिक है तो विद्यार्थी भी विभिन्न पृष्ठभूमि के होंगे ऐसे में संभव है के उनके सीखने की क्षमता तथा सीखने की विधि भी भिन्न -भिन्न हो इसलिए यह निश्चित रूप से आवश्यक है कि शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों एवं विभिन्न संचार तकनीकी का ज्ञान हो जिससे छात्रोंको सुलभता से सिखाया जा सके | एक शिक्षक में वाकपटुता का गुण निश्चित तौर पर होना चाहिए जिससे वह अपनी बात को छात्रों तक प्रभावी और सही रूप में पंहुचा सके | बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में शिक्ष क को किसी क्षेत्र विशेष के विद्यार्थियों पर ही पूरा ध्यान नहीं देना चाहिए अपितु सभी पृष्ठभूमि से आये विद्यार्थियों को उनकी रूचि, क्षमता, योग्यताके अनुरूप समानरूपसे शिक्षा प्रदान करनी चाहिए | शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों को सक्रिय बनाये रखने के लिए यह आवश्यक है कि छात्रों को स्वयं कर के सिखने का अवसर प्रदान किया जायजिससे छात्र अधिकाधिक सिख सकें | शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान छात्रों को जब स्वयं कर के सिखने के अवसर प्रदान करे तो उस समय भी शिक्षक का यह दायित्व बनता है कि वह आवश्यकतानुसार छात्रों निर्देशन करता रहे तथा छात्रों के साथ मित्रवत व्यव्हार बनाये रखे | शिक्षक के लिए यह अति आवश्यक है कि कक्षा शिक्षण के दौरान समय तथा अनुसासन का विशेष ध्यान रखे जिससे शिक्षा प्रक्रिया को सुचारू रूप से चलाया जा सके | बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में शिक्षक को किसी भी प्रकार कि रुढियों से बचना चाहिए जिससे वह छात्रों के गुण-दोषों से परिचित होकर दोष को दूर करने के उपाय खोज सकेतथागुणों को प्रोत्साहित कर सके | बहुसांस्कृतिककक्षा-

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कक्ष शिक्षण प्रक्रिया के दौरा न शिक्षण कार्य नीरस न हो जाए इसके लिए शिक्षक को चाहिए कि वह समय-समय पर शिक्षण तथ्य से सम्बंधित कुछ रोचक उदारण प्रस्तुत करता रहे जिससे शिक्षा को रूचिकर बनाया जा सके | इस प्रकार बहुसांस्कृतिक कक्षा-कक्ष में विभिन्न परिवेश से आये छात्रों कीरूचि, क्षमता , योग्यता तथा आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए शिक्षण -अधिगम प्रक्रिया का आयोजन करना चाहिए जिससे छात्रों को अधिक से अधिक प्रोत्साहित कर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में सक्रिय रूप से भागीदार बनाया जा सके | शिक्षक का यह उत्तरदायित्व बनता है कि वह छात्रों को उचित शैक्षिक वातावरण प्रदान करे जिससे वे अपनी क्षमता तथा योग्यता के अनुरूप सीख सकें |

सन्दर्भ सूची

भटनागर, एल.बी. तथा भटनागर , ए. (2008). फिजिकल साइंस शिक्षण. मेरठ: आर .लाल बुक डिपो. पृष्ठ संख्या. 295-324.

भट्टाचार्य, जी. सी . (2014). अध्यापक शिक्षा. अग्रवाल पब्लिके शन्स. आगरा: पृष्ठ संख्या. 222-271.

बाजपेई, एल. बी. (2006). शिक्षा में नवाचार एवं तकनीकी. लखनऊ: अलोक प्रकाशन. पृष्ठ संख्या. 249-262.

मालवीय, आर. (2010). शिक्षा दर्शन एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन. पृष्ठ संख्या. 167-176.

मालवीय, आर. (2010). शिक्षा का समाजशास्त्रीय सर्वेक्षण . इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन. पृष्ठ संख्या. 68-78.

मिश्रा, यू. (2012). शिक्षा का समाजशास्त्र. इलाहाबाद: न्यू कैलाश प्रकाशन. पृष्ठ संख्या. 23-38.

लाल, आर. बी. (2014). शिक्षा की दार्शनिक एवं सामाजिक पृष्ठभूमि. मेरठ: रस्तोगी पब्लिकेशन्स. पृष्ठ संख्या. 447-459.

रूहेला, एस.पी. (*2012*). शिक्षा के दार्शनिक तथा समाजशास्त्रीय आधार . आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन्स. पृष्ठ संख्या. 169-202.

उपाध्याय, पी. (2009). भारतीय शिक्षा में उदीयमानप्रवृत्तियाँ. इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन. पृष्ठ संख्या.*238*-2*73*.

http://cepa.stanford.edu.content.teacher

http://cndls.georgetown.edu

http://www.thoughtco.com

Teaching.monster.com

www.wikipedia/multiculturedclassroomandteacher.org

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies